Sociology

B-I (H) Paper — II — 1

Discuss Sorokin's Theory of Social & Cultural Dynamics.

or

(सोरोकिन के सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता के सिद्धांत का वर्णन करें?)

या

Discuss the cyclical or theory of Immanent Social Change propounded by P. A. Sorokin

(सोरोकिन के चक्रिय या स्वाभाविक सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत की आलोचनात्मक विवेचना करें?)

अमेरिकन समाजशास्त्री P.A. Sorokin द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत में सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन्होंने अपनी पुस्तक 'Social & Culture Dynamics' के चार खण्डों में इस सिद्धांत का वर्णन किया है। साथ ही इनकी पुस्तक 'Society, Culture & Personality' में भी इस सिद्धांत का वर्णन मिलता है। अपना सिद्धांत प्रस्तुत करने से पहले इन्होंने सामाजिक परिवर्तन के रेखीय (Linear) तथा चक्रिय (Cycle) सिद्धांतों के समर्थकों के विचार का खंडन किया और बताया कि ये दोनों ही सिद्धांत सामाजिक परिवर्तन की समस्या पर सही ढंग से प्रकाश नही डालते हैं। सोरोकिन ने अपने पूर्ववर्ती विचारकों के सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित सिद्धांतों का खण्डन किया और सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित एक सिद्धांत प्रस्तुत किया जो सामाजिक सांस्कृतिक गतिशीलता के सिद्धांत से जाना जाता है। इनके इस सिद्धांत को स्वाभाविक सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत (Theory of Immanent Social Change) भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकी इन्होंने बताया है कि सामाजिक परिवर्तन इसलिए होता है क्योंकी ऐसा होना स्वाभाविक है। इनके अनुसार यदि बाह्य परिस्थितियाँ एक समान बनी रहें तो भी परिवर्तन होगा ही क्योंकी परिवर्तन विकास की प्रक्रिया में निहित है और ऐसा होना स्वाभाविक है। इसका अर्थ जैसे-जैसे किसी चीज का विकास होगा वैसे-वैसे उसके रूप परिवर्तन होगा। हम चाहे या न चाहें परिवर्तन होगा ही, यही प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। सोरोकिन ने सामाजिक परिवर्तन में आंतरिक शक्तियों की भूमिका को विशेष रूप से स्वीकार किया है। किंतु इसका अर्थ यह नही कि सामाजिक परिवर्तन में बाह्य शक्तियों के महत्व को पूर्णतया अस्वीकार किया है। इन्होंने बाह्य शक्तियों के महत्व को स्वीकार करते हुए अपनी पुस्तक 'Social & Cultural Dynamics' में लिखा है " परिवर्तन के स्वाभाविक सिद्धांत को मान्यता देने में सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन

Scanned with CamScanner

2

की बाह्य शक्तियों की भूमिका की मान्यताओं को अस्वीकार नहीं किया गया है। (The endersenent of the immanent principle of change does not hinder a recognition of the role of the external forces in the change of the social cultural system) किंतु सोरोकिन अपनी एक दूसरी पुस्तक 'Society Culture & Personality' में स्वाभाविक सामाजिक परिवर्तन पर विशेष बल दिया है और बाह्य शक्तियों को द्वैतियक कारक (Secondary contributing factors) बताया। प्राकृतिक और बाह्य शक्तियाँ भी परिवर्तन उत्पन्न करती है किंतु उनका प्रभाव रचनात्मक कम और विनाशकारी अधिक होता है। सोरोकिन ने सीमा के सिद्धांत (Principal of limit) तथा चलती-बढ़ती या उतार-चढ़ाव के सिद्धांत (Principal of fluctuation) के आधार पर सामाजिक परिवर्तन का वर्णन किया है। इनके अनुसार परिवर्तन अवश्यभावी है। किंतु इन्होंने रेखीय परिवर्तन (Linear change) असंभव है क्योंकी एक ही दिशा मे असीमित परिमाण में परिवर्तन संभव नहीं है। इन्होंने सीमा के सिद्धांत के आधार पर यह विचार व्यक्त किया कि परिवर्तन हमेशा एक निश्चित सीमा के अन्तर्गत ही होता है। सोरोकिन इस बात को समझाते हुए कहा है कि पियानो की चाबी को जितना और से मारा जाएगा इसके परिणाम स्वरूप उतनी ही और की आवाज निकलेगी। किंतु यह आवाज एक निश्चित सीमा के अन्दर ही उत्पन्न होगी। एक निश्चित सीमा से अधिक आवाज निकालने के लिए पियानो तार पर और से प्रहार किया जाएगा तो आवाज में वृद्धि नहीं होगी बल्की पियानो ही टूट जाएगा। एक निश्चित सीमा के अन्दर आवाज की निश्चित सीमा मार की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रकार्य है... एक सीमा के उपरांत आवाज के विस्तार में वृद्धि नहीं होगी, अपितु एक टूटा हुआ पियानो होगा। (The more strongly a strike a piano, the louder the resulting sound, within a certain limit the loudness of the sound is a direct function of the force exerted in the stroke ... beyond a certain limit the result wile not be an increase in the volume of sound but rather a broken piano) सोरोकिन ने चढ़ती-चलती के सिद्धांत (Principal of fluctuation) के रूप में भी अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया है। इनके अनुसार परिवर्तन न तो रेखीय (Linear) और न ही

चक्रिय रूप में होता है, बल्की उतार - चढ़ाव (fluctuation) के रूप मेंहोता है। अर्थात परिवर्तन किस दिशा में होगा यह निश्चित रूप से नही कहाजा सकता। क्योकी यह अनिश्चित और अनियमित रूप से होता है और इसकी गति के सम्बन्ध में भविष्यवाणी नही की जा सकती। सदरलैंड व वुडवर्ड Sutherland & Woodword) ने सोरोकिन (Sorokin) के उतार-चढ़ाव के सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जिस तरह रेतीली भूमि परचल-ने वाले मुर्गी के बच्चें की गति के सम्बन्ध में निश्चित रूप से नही कहा जा सकता है कि वह किधर जाऐगा, उसी तरह सोरोकिन के अनुसार निश्-चित रूप से यह नही कहा जा सकता कि परिवर्तन की दिशा एवं गति किधर होगी। सोरोकिन (Sorokin) ने सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन कीव्याख्या करने के लिए संस्कृति या सांस्कृतिक व्यवस्था के प्रकारों का भी उल्लेख किया है जो इस प्रकार से हैं:-

(1) भावात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था (Ideational cultural System)
(2) आदर्शात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था (Idealistic Cultural System)
(3) चेतनात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था (Sensati Cultural System)

प्रतिदिन की भाषा में जिसे हम अभौतिक संस्कृति (Non material Culture) कहते हैं उसे ही सोरोकिन ने भावात्मक संस्कृति कहा है। इस संस्कृति में धर्म, प्रथाओं, परम्पराओं, जनरीतियों, लोकाचारों इत्यादि का प्रभाव अधिक रहता है और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी पिछड़ी रहती है। इसमें उस साधनों का महत्व विशेषहोता है जिनके द्वारा आध्यात्मिक उन्नति तथा मोक्ष की प्राप्ति संभव होती है। लोगों का झुकाव आध्यात्मिक विकास की तरफ केन्द्रित रहता है।

प्रतिदिन की बोलचाल में जिसे हम भौतिक संस्कृति (Material culture) कहते हैं उसे ही सोरोकिन ने चेतनात्मक संस्कृति कहा है। इसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ जाता है और धर्म, प्रथाओं, परम्पराओं, लोकाचारों आदि का महत्व कम हो जाता है।

सोरोकिन के अनुसार उपरलिखित दोनों ही सांस्कृतिक व्यवस्थाएँ दोषपूर्ण है। भावात्मक सांस्कृतिक व्यवस्थाका दोष यह है कि इसमें भौतिक प्रगति अवरुद्ध होती है। उसी तरह चेतना-त्मक सांस्कृतिक व्यवस्था का दोष यह है कि इसमें आध्यात्मिक उन्नति की तरफ से लोगों का झुकाव कम हो जाता है। इन दोनों सांस्कृतिक व्यवस्थाओं की अच्छाइयों के आधार पर जिस तिसरी सांस्कृतिकव्यवस्था

4

का निर्माण होता है उसे ही सोरोकिन ने आदर्शात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था कहा है। और ये व्यवस्था दोषमुक्त है क्योंकी इसका निर्माण उपरलिखित दो सांस्कृतिक व्यवस्थाओं की अच्छाइयों के आधार पर होता है। सोरोकिन के अनुसार सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था के दो चरमबिन्दुओं (Two extreme points) के अन्तर्गत होता है। प्रथम चरमबिन्दु - भावात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था तथा दुसरा चरम बिन्दु चेतनात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था। इन दोनो सीमाओं के अन्तर्गत उतार-चढ़ाव के सिद्धांत के आधारपर परिवर्तन होता है। सोरोकिन ने बताया है कि जब भावात्मक संस्कृति विकास के अपने चरम बिन्दु पर पहुँचती है तब विपरीत दिशा में परिवर्तन होना प्रारंभ होता है। संस्कृति के चेतनात्मक संस्कृति में परिवर्तन के पहले संस्कृति को आदर्शात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था से होकर गुजरना पड़ता है। जब संस्कृति चेतनात्मक संस्कृति के चरमबिन्दु पर पहुँचती है तब वह पुनः पीछे की ओर मुड़ती है। भावात्मक संस्कृति की तरफ परिवर्तन के दौरान संस्कृति को पुनः आदर्शात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था से होकरगुजरना पड़ता है। इस तरह यह स्पष्ट है कि भावात्मक से चेतनात्मकतथा चेतनात्मक से भावात्मक संस्कृति की तरफ उतार-चढ़ाव के सिद्धांत के आधार पर परिवर्तन होता है। सोरोकिन के उतार-चढ़ाव के सिद्धांतो को स्पष्ट करते हुए रॉबर्ट बीरस्टीट (Robert Bierstedt) ने भी लिखा है " इतिहास चक्रो को नहीं उतार-चढ़ावों को प्रदर्शित करता है और यद्यपि संस्कृति चेतनात्मक या भावात्मक दिशा की ओर सदैव घुमती रहती है, पर यह उनके अंतिम छोर तक नहीं पहुँचती। ये सीमाएँ है जहाँ से इसे विपरीत दिशा की ओर मुड़ना ही पड़ता है। (History exibits not cycles, but only fluctuations, & although culture is always moving, as it were, in the sensate or ideational direction, it does not always reach these poles ... these are the limits, at which it must exonerably turn in opposite Direction)

आलोचना

Sorokin (सोरोकिन) के इस सिद्धांत के कुछ दोष भी है जो इसप्रकार से है:-

(1) सोरोकिन ने संस्कृति को चार भागों में विभाजित किया है, किंतु केवल तीन प्रकारों में उतार-चढ़ाव के सिद्धांत के आधार पर सामाजिक सांस्कृतिक

परिवर्तन की व्याख्या किया है। जो उचित नहीं प्रतीत होता है।

(२) सोरोकिन का भावात्मक और मिश्रित संस्कृति (Ideational & mixed culture) से सम्बन्धित विचार अस्पष्ट है। साथ ही उनका संस्कृति का भावात्मक, आदर्शात्मक और चेतनात्मक इन तीन भागों में विभाजन संतोषजनक नहीं है। M.W. Vince ने भी इस तरह का विचार दिया है और लिखा है "(Sorokin division into ideational, idealistic & sensate types of culture is far from satisfactory, These is also a vagueness of distinction between his idealistic & mixed culture, that makes it difficult to separate the two")

(3) सोरोकिन का एक तरफ स्वाभाविक सामाजिक परिवर्तन का विचार प्रस्तुत करना और दूसरी तरफ सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न करने में बाह्य शक्तियों के महत्व को स्वीकार करना और द्वैतियक कारक (Secondary contributing factor) बताना, एक दूसरे का विरोधी प्रतीत होता है।

(४) सोरोकिन का यह कथन कि परिवर्तन इसलिए होता है क्योंकी ऐसा होना स्वाभाविक है, एक वैज्ञानिक वर्णन नहीं कहा जा सकता क्योंकी इसे उन्होंने कारण प्रभाव संबंध (Cause effect relationship) के आधार पर नहीं समझाया है। स्वाभाविक परिवर्तन कह देना किसी कारक का स्पष्टीकरण नहीं करता है।

(5) एक तरफ सोरोकिन ने बताया है कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा अनिश्चित होती है और परिवर्तन उतार-चढ़ाव के सिद्धांत के आधार पर होता है। अतः इसकी दिशा में भविष्यवाणी नहीं कि जा सकती। दूसरी तरफ उन्होंने पाश्चात्य संस्कृति के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की है कि पाश्चात्य संस्कृति चेतनात्मक सांस्कृतिक व्यवस्था (Sensate cultural system) के चरम बिन्दु पर पहुँच रही है और बहुत जल्द उसका पतन होगा। इस तरह का विचार देकर सोरोकिन ने स्वयं अपने उतार-चढ़ाव के सिद्धांत (Principal of fluctuation) का उल्लंघन किया है।

S.N. Choudhary
L.N.M.U